DOI: 10.51220/hjssh.v9i1.4

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 9 pp.25 - 30, December, 2014, ISSN. 0975 - 9891

कालिदासीय नाटकों में पत्राचार प्रणाली

महेश दुर्गापाल
संस्कृत विभाग
हे.न.ब. गढ़वाल, विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

Received: 12.09.2014 Revised: 22.10.2014 Accepted: 19.12.2014

ABSTRACT

जनसामान्य के बीच विचारों के आदान-प्रदान को संचार कहा जाता है। अंग्रेजी में संचार के पर्याय Communication शब्द की व्याख्या में कहा गया है The act of Sharing or Exchanging Information, Ideas or Feeling[1] अर्थात् सूचनाओं, विचारों व भावनाओं का आदान-प्रदान संचार के नाम से जाना जाता है। विचारों के आदान-प्रदान में हमारे बीच संचार प्रत्यक्ष व परोक्ष दो प्रकार से हो सकता है। प्रत्यक्ष तो दो अथवा दो से अधिक व्यक्तियों के बीच परस्पर वार्तालाप आदि से होता है। परोक्षतः संचार में व्यक्ति अथवा समूह परस्पर आमने-सामने नहीं रहते इसमें संचाार के माध्यम प्रयुक्त किए जाते है, इन्ही माध्यमों में पत्र भी एक माध्यम प्राचीनकाल से प्रयुक्त होता रहा है। प्रस्तुत आलेख इसी से सम्बन्धित है।

KEY WORDS-संचार, नाटक, पत्र, औपचारिक-अनौपचारिक पत्र, केंचुली

महाकवि कालिदास का नाम सर्वविश्रुत है। संस्कृत के व्यापक साहित्य में कालिदास के सात ग्रन्थ सुशोभित हैं। इनका विभाजन विद्वानों ने महाकाव्य, खण्डकाव्य व नाटकों में किया है। नाटक स्पष्टतः अभिनेय होते थे "दृश्यं तत्राभिनेयं।"[2] संचार के लिये नाटक प्राचीनकाल में वर्तमान "फिल्मांकन" की तरह प्रसिद्ध थे। प्रसिद्ध राजाओं के यहाँ नाट्य का आयोजन होता था, जैसे अभिज्ञानशाकुन्तलम् का आयोजन राजा विक्रमादित्य के विद्वत् परिषद में हुआ था-"इयंहि रसभावविशेष दीक्षागुरोर्विक्रमादित्यस्य अभिभूमिष्ठापरिषत्। अस्यांचकालिदास ग्रथितवस्तुनाऽभिज्ञानशाकुन्तल नामधेयेन नवेन नाट्येनोपस्थातव्यं"[3] नाटकों में तत्कालिक समाज का चित्रण होता है कालिदास के नाटकों में भी तात्कालिक समाज के विविध पक्षों का अध्ययन विद्वानों के द्वारा निरन्तर होता रहा है। प्रस्तुत शोधपत्र में कालिदास के नाट्यों में समाज में प्रचलित संचार के लिये पत्रचार से सम्बन्धित तथ्यों का अध्ययन किया गया है।

पत्राचार पत्रों द्वारा विचारों के आदान-प्रदान से सम्बन्धित है। पत्र अर्थात् विचारों का लेखन जो अंग्रेजी शब्द Letter का पर्याय है इसे समझाते हुए कहा गया है A Written of Printed Sign that represent a sound in a Language[4] अर्थात् वह बात जो आप बोलना चाहते हैं, उन्हें शब्द अथवा भाषा के द्वारा लेखन ही पत्र है। कालीदास कालीन समाज में पत्रचार का प्रचलन पर्याप्त रूप से विकसित हो गया था। यह परम्परा

©SHARAD

औपचारिक व अनौपचारिक रूप में समझी जा सकती है। राजकार्य से जुडे पत्र औपचारिक थे तथा प्रेमपत्र आदि अनौपचारिक। मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम व अभिज्ञानशाकुन्तल में क्रमशः पत्र व्यवहार से सम्बन्धित तथ्यों का विवरण निम्नलिखित है-

मालविकाग्निमित्रम् का पत्राचार

मालविकाग्निमित्रम् में पाँच अंक है तथा यह प्रसिद्ध शुंगवशीय अग्निमित्र तथा मालविका (विर्दभराजपुत्री माधवसेन की बहिन) की प्रणयकथा पर आधारित है। कथावस्तु ऐतिहासिक है। इस नाटक में राजकार्य व परिवार से सम्बन्धित दो प्रकार के पत्र व्यवहार देखने को मिलते हैं। पंचम अंक में जब मालविका का राजपुत्री होना प्रकट होता है तथा यह विर्दभराजपुत्र माधवसेन की बहिन हैं यह स्पष्ट होता है तब राजा अग्निमित्र विर्दभ के दो भाग कर यज्ञसेन व माधवसेन को पृथक-पृथक राज्य सौंपता है। राज्य के बंटवारे का निर्धारण सेनापति वीरसेन करता है जिसके लिए राजा के द्वारा लिखित संदेश दिया जाता है "राजा-तेन हि मंत्रिपरिषदं ब्रूहि सेनान्ये वीरसेनाय लेख्यतामेवं क्रियताम् इति।"[5] स्पष्ट है कि राजा सेनापति को पत्र द्वारा संदेश दे रहा है। राजा व मंत्रिपरिषद् (मंत्रिमण्डल) दूरस्थ राजाधिकारियों को लिखित संदेश भेजते रहे होंगे। पुनः जब यह कहकर कंचुकी लौटता है तब वह परिवार के वरिष्ठतम पुश्यमित्र (अग्निमित्र के पिता) का पत्र लेकर आता है। वह पत्र बड़ा है बीच में एक पद्य भी जोड़ा गया है पत्र इस प्रकार है-

स्वस्ति! यज्ञशरणात्सेनापतिः पुश्यमित्रे वेदिस्थं पुत्रं आयुश्मन्तं अग्निमित्रम् स्नेहात् परिष्वज्येदमनुदर्शयति-विदितमस्तु योऽसौ राजयज्ञ दिक्षितेन मया राजपुत्रशतपरिवृत्तं वसुमित्रं गोप्तारमादिषय वत्सरोपात्तनियमो निर्गलस्तुरंगो विसृष्टः स सिन्धोर्दक्षिणरोघसि चरन्नश्वानीकेन यवनेन प्रार्थितःतत उभयो सेनयोर्महानासीत्सम्र्मदः।

ततः परान्पराजित्य वसुमित्रेण धान्विना
प्रसह्यह्रियमाणो मे वाजिराजो निवर्तितः।।

सोऽहमिदानीमशुंमता सगरपुत्रेणेव प्रत्यादृष्ताश्वो यक्ष्येतदिदानीमहाकालहीनं विगतरोषचेतसा भवता वधूजनेन सह यज्ञसेवनायागन्तव्यम् इति।[6]

हिन्दी अनुवाद-आपका कल्याण हो

विदिशा से आए हुए जिरंजीवी पुत्र अग्निमित्र को स्नेहपूर्वक आलिंगन करके अश्वमेघ यज्ञ की दिक्षा लिए हुए सेनापति पुश्यमित्र लिख रहे हैं-

हम यह बताना चाहते हैं कि अश्वमेघ की दीक्षा लेकर मैंने एक वर्ष की अवधि के लिए रज्जुहीन घोडा छोड़ा था और जिसकी रक्षा के लिए सैकड़ों राजकुमारों के साथ वसुमित्र को भेजा था। वह घोड़ा सिन्धु नदी के तट पर चल रहा था तो घुडसवार सेना के एक यवन ने उसे पकड़ लिया। वसुमित्र व घुडसवार का घोर युद्ध हुआ। तदन्तर वसुमित्र ने घुड़सवार से घोड़ा छीन लिया। जैसे राजा सगर के यज्ञ में अंशुमान ने जो कार्य किया वही हमारे पौत्र ने भी, अब मैं निश्चिन्त यज्ञ सम्पादन करूंगा आप सभी इसमें उपस्थित रहें।

प्रस्तुत पत्र में पत्रलेखन की शैली सुन्दर है। पत्र के प्रारम्भ में पुश्यमित्र अपने पुत्र अग्निमित्र को आशीषवाचक शब्दों के साथ सम्बोधित करते हैं। तदन्तर द्वितीय भाग में विषय को विस्तार दिया गया है। पुश्यमित्र के अश्वमेघयज्ञ के अश्व की रक्षा यवनों से वसुमित्र (अग्निमित्र का पुत्र) ने की यह स्पष्ट होता

है। पत्र के अन्त में पुश्यमित्र अग्निमित्र को अश्वमेघयज्ञ के लिए आमन्त्रित करते हैं। इस तरह पत्र को मुख्यत: तीन भाग दिये गये हैं। पत्राचार के प्रारम्भ की सुन्दर शैली यहाँ देखने को मिलती है। पत्र के बीच में पद्य का होना तात्कालिक प्रथा सी दिखती है क्योंकि अन्य पत्रों में भी ऐसा है। पुष्यमित्र का पुत्र अग्निमित्र तथा अग्निमित्र का वसुमित्र तीन पीढ़ियों का पता इस पत्र में चलता है। मालविकाग्निमित्रम् के दोनों उल्लेख औपचारिक हैं। राजा व वरिष्ठ अधिकारियों के बीच पत्रचार की परम्परा थी, पारिवारिक घटनाऐं भी पत्र के माध्यम से संचारित होती थी। पुष्यमित्र के द्वारा अग्निमित्र को भेजे गये पत्र में प्रमुख घटना (वसुमित्र द्वारा यवनों को हराना) के साथ अश्वमेध के लिए आमंत्रण भी दिया गया हैं। सम्भव है आमंत्रण व निमंत्रण में पत्र चलते रहें होंगे। वर्तमान समाज में आज भी निमंत्रण आदि प्रसंगों में खूब पत्राचार प्रचलित हैं, जो एक प्राचीन भारतीय प्रथा है।

विक्रर्मोवशीयम् के पत्र सम्बन्धि उल्लेख

विक्रर्मोवशीयम् नाटक पांच अंकों में विभाजित है। नाटक ऋग्वेद के दशम् मण्डल के 90वाँ सूक्त की काव्यात्मक प्रस्तुति देता है। इस काव्य में नायक व नायिका के मध्य स्नेहाभिव्यक्ति पत्र के माध्यम से दर्शाई गई है। पत्रचार के लिये कुछ प्रमाणित बातें इन विवरणों में देखी जाती है। घटना द्वितीय अंक से जुड़ी है उर्वशी जो कि नायिका है वह राजा के प्रति अपना मनोभाव पत्र के द्वारा प्रकट करती है-

उर्वशी-असमर्थास्म्यग्रतो भूत्वास्य प्रतिवचनस्य तत्प्रभावनिर्मितेन भूर्जपत्रेण सम्पादितोत्तरां भवितुमिच्छामि।[7](मैं सामने जाकर उत्तर देने में असमर्थ हूँ अत: भोजपत्र में कुछ लिखकर उत्तर देती हूँ।)

चित्रलेखा-हला! अनुमतं में। (मैं भी यही उचित समझती हूँ।)

-पत्र के लिये भूर्जपत्र (भोजपत्र) का उल्लेख किया गया है। पुन: जब राजा के पास पत्र पहुंचता है तब विदूषक कहता है-

विदूशक- ....भो किन्नु खलु एतत् भुजंगनिर्मोक:। किं माम् खादितुं निपतित:

(अरे यह साँप की केंचुली मुझे खाने को यहां पर कहां से आई।)

राजा-वयस्य नायं भुजंगनिर्मोक: भुर्जपत्रगतोऽयमक्षरविन्यास:।[8]

(मित्र यह साँप की केंचुली नहीं है यह लिखित भोजपत्र है।)

साँप की केचुली पूर्णत: स्वेत नहीं होती इसमें थोड़ा-थोड़ा धूसर वर्ण हुआ करता है। भोजपत्र पूर्णत: भूरापन (सूखने पर) लिए रहता है। भूरेपन को संस्कारित करके घूसर (कुछ-कुछ सफेद) वर्ण में ढाला जाता होगा। तदन्तर पत्र व्यवहार के लिए प्रयुक्त किया जाता होगा। अन्यथा भूरे रंग के भोजपत्र से घूसरवर्णी केंचुली की उपमा भला क्यों कालिदास देते? कालिदास उपमा के लिए सर्वप्रसिद्ध हैं। इस भोजपत्र को अच्छी तरह से संस्कारित किया जाता था तथा कपड़े की भाँति इसे मुलायम बनाया जाता था क्योंकि रानी इरावति व उसकी सेविका की बातें यही स्पष्ट करती हैं-

देवी- ....किं नु खलु एतंजीर्णचिवरमिव इतोमुखं दक्षिणमारूतेनानीयते।

(दक्षिण-वायु द्वारा पुराने वस्त्र की भांति यह इधर कुछ लाया जा रहा है।)

निपुणिका: ....भट्टिनि! परिवर्त्तनविभाविताक्षंर भूर्जपत्र खल्वेतत्''।[9]

(भट्टिनि! यह लिखित भोजपत्र है जो उलट-पुलट कर आ रहा है।)

यहाँ पत्र के लिये महाकवि कालिदास की उपमा पुराने वस्त्र की भांति विचारणीय है। धूसरवर्णी, पुराने वस्त्र की तरह, भोजपत्र के संस्कारित होने की पुष्टी करते हैं। पत्र में लिखा है-

राजा- ''स्वामिन्सम्भाविता यथाहं त्वयाऽज्ञाता तथानुरक्तस्य यदिनाम तवोपरि।

किं में ललितपरिजातशयनीये भवन्ति नन्दनवनवाता अप्युत्युष्णकाः शरीरके।।[10]

(अर्थात् हे स्वामि् जैसे आप मुझमें अनुरक्त हैं मैं भी तदनुरूप अनुरागवती हूँ। मुझे अन्यथा न समझें। जब मैं नन्दनवन में सुकोमल सेज पर लेटती हूँ तो शीतलवायु भी मुझे शान्ति प्रदान नहीं करती)

-इस तरह पत्र राजा के पास पहुँचा, राजा ने मित्र विदूषक को दिया, विदूषक से खो गया, हवा में उड़ता हुआ रानी इरावती के पास पहुंचा, आदि कथानक इसी अंक से जुड़ा है जो पत्रव्यवहार के द्वारा गतिमान है। एक और बात राजा यहां कहता है-वयस्यः अंगुलिस्वेदेन दूश्येन्नक्षराणि[11] अर्थात् ये अक्षर हाथ के पसीने से धूमिल हो जायेंगे। अक्षरों के विन्यास में प्राकृतिक रंग प्रयुक्त किये जाते होंगे, जो पानी वाले थे तथा इन पर पानी पड़ने पर अथवा पसीने की बूंद इन्हें धूमिल अथवा फैलाव जैसे करती होगी जैसे स्याही होती है। यह बात पत्र व पत्र लेखन में महत्वपूर्ण हैं। इस तरह विक्रर्मोवशीयम् के पत्र कई महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाशित करते हैं। पत्राचार के संसाधन जैसे-भोजपत्र व लेखन सामग्री का उल्लेख किया गया हैं। पत्राचार में पानी के रंग प्रयुक्त किये जाते थे। पूर्व में पत्र के लिए पुराने कपड़े जैसा यह उपमा पत्र की संरचना का प्रारूप स्पष्ट करती हैं। पुराना कपडा लोचदार होता हैं अतः पत्र भी लचीला रहा होगा। हवा में उड़ता हुआ लोट-पोट कर इत्यादि बाते उसके आकार का बड़ा होना बताते हैं।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पत्र सन्दर्भ

अभिज्ञानशाकुन्तलम् कालिदास के नाट्यग्रन्थों में सर्वाधिक प्रसिद्ध नाटक है। नाटक की कथा हस्तिनापुर नरेश दुष्यन्त व मेनका (एक प्रसिद्ध अप्सरा) की पुत्री शकुन्तला की प्रणयलीला है। सम्पूर्ण नाटक सात अंकों का है। कथा प्राचीन महाभारत व पद्मपुराण के शाकुन्तलोपाख्यान का विकसित रूप है। पूर्वनाटकों में पत्र का स्वरूप व पत्र की सामग्री, सम्बन्धित तथ्य प्रकाशित होते हैं, किन्तु यहाँ ऐसा कुछ नहीं मिलता। शाकुन्तलम् के पत्र मात्र तात्कालिक पत्रव्यवहार के प्रचलन सम्बन्धी तथ्य ही प्रकाशित करते हैं। नाटक के तृतीय,चतुर्थ, षष्ठम् अंक में लिखी गई बातें ध्यान देने योग्य है। सर्वप्रथम तृतीय अंक में यथा-

प्रियावंदा-हला! मदनलेखोऽस्य क्रियताम्! इमं देवप्रसादस्यापदेशेन सुमनोगोपितं कृत्वा तस्य हस्तं व्यामि। (सखि! प्रेमपत्र लिखे? इसकों पुष्पों में छुपाकर राजा के हाथ में सौंप देंगे।)

अनसूया-रोचते में सुकुमारः प्रयोगः। किं वा शकुन्तला भणति?

(मुझे यह प्रयोग अच्छा लगेगा। शकुन्तला क्या कहती हो?)

शकुन्तला-को नियोगो विकल्प्यते? (आपसे अलग मेरी भी कोई राय हो सकती है?)

प्रियम्बदा-तेन ह्यात्मनं उपन्यासपूर्वं चिन्तय तावल्ललितपदबन्धनम्।

(सखि! मन में सोचो फिर उसे गीतात्मक पद्य में लिखेंगे)

शकुन्तला-चिन्तितं मया गीतवस्तु। न खलु सन्निहितानि पुनर्लेखनसाधनानि।

(सखि गीत तो सोच लिया, पर लेखन सामग्री नहीं है)

प्रियवंदा- एतस्मिन् शुकोदर सुकुमारे नलिनीपत्रे नखेर्निक्षिप्तवर्णं कुरू।[12]

(सखि कोई बात नहीं यह कमल के पत्ते पर ही नाखून से लिख दो।)

इस तरह का वार्तालाप कुछ तथ्यों को प्रकाशित करता है जैसे पत्र लेखन के लिए सामग्री आवश्य थी जिसका अभाव यहाँ संकेत में दिया गया है। पत्र में गीत भी लिखे जाते थे क्योंकि ललितपदवन्धन में स्पष्टत: यह ध्वनित होता है। सम्माननीय जनों के प्रति भेंट इत्यादि देने की प्रथा थी राजा को फूल देना यह तथ्य पुष्टिकरण के लिए पर्याप्त हैं। प्रेमपत्र के लिए मदनलेख (Love Latter) का उल्लेख है। लोग जानते थे यह कौन सा पत्र हैं। पत्र लिखा गया है कमल पत्ते पर तथा नाखुनों से यहां स्पष्टत: ज्ञात हो रहा हैं भोजपत्र के अलावा बड़ें आकार वाले पत्तों का तथा पत्ते में छेदकर लिखा जाना प्रचलित था। पत्र में लिखे गये वाक्य हैं-

तव न जाने हृदयं मम पुन: कामो दिवाऽपि रात्रिमपि।

निर्घृण! तपसि वलियस्त्वयि वृत्तमनोरथान्यऽगांनि।।[13]

(हे राजन! मैं आपके मन की बात नहीं जानती किन्तु मैं आपमें अत्यधिक अनुरक्त हो गयी हूँ मेरे समस्त अंग शिथिल पड़ रहे है)

यह था तृतीय अंक का पत्र व्यवहार जो कमल पत्ते में लिखा गया था। चतुर्थ अंक में शकुन्तला की सखि दुष्यन्त के व्यवहार से जो की शकुन्तला से गन्धर्व-विवाह कर हस्तिनापुर जा चुका है इस पर चिन्तित होकर कहती है-''अन्यथा कथं स राजर्षि: तादृशानि मन्त्रयित्वेतावत्कालस्य लेखमात्रमपि न विस्रजति''[14] (अर्थात् इतना समय बीतने पर भी उसने (दुष्यन्त) एक पत्र नहीं लिखा) इस तथ्य से पत्र व्यवहार का लोकप्रचलन स्पष्ट पता चलता है। बहुत समय बीतने पर जब वह पत्र नहीं प्राप्त होने की बात करती है तो यही सिद्ध होता है कि व्यवहार में परस्पर पत्राचार चला करता था। पुन: षष्ठम् अंक में भी (राज-काज सम्बन्धी) पत्राचार के बारे में लिखा है-

राजा-वेत्रवती! मद्वचनादमात्यार्यपिशुनं ब्रूहि चिरप्रबोधनाक सम्भावितमस्माभिरद्य धर्मासनमधयासितुम् । यत्प्रत्यवेक्षितं पौरकार्यमार्येण तत्पत्रमारोप्य दीयताम्।[15] (वेत्रवती! आमात्य से कहना अनिद्रा से मैं आज राजकार्य में संलग्न नहीं रहूंगा। राजकार्य की बातें मुझे लिखित रूप में भेजना) कुछ समय के बाद जब वेत्रवती लौटकर आती है तब वह कहती है-

प्रतिहारी-देव! अमात्यो विज्ञापयति अर्थज्ञातस्यगणनाबाहुलतयैकमेव पौरकार्यमवेक्षितं तद्देव: पत्रारूढ प्रत्यक्षीकरोत्विति।[16] (हे राजन! अमात्य ने पत्र दिया है तथा कहा है दिन भर अर्थव्यवस्था में उलझा रह गया प्रजा से जुड़ा (लोकजीवन) में एक कार्य कर पाया हूँ इसे देखें।)

इस तरह पत्र राजा व अमात्य (प्रधानमंत्री) के बीच राजकाज से सम्बन्धी वार्तालाप का माध्यम बना। पत्र में किसी नाविक की दुर्घटना में मृत्यु व उसके वित्तकोष को राजकोष में संयोजित करने की अनुशंसा दी गई थी ''समुद्रव्यवहारी सार्थवाहो धनमित्रों नाम नौव्यसने विपन्न:? अनपत्यश्च किल तपस्वी। राजगामी तस्यार्थसंचय'' इति अमात्येन लिखितम्।[17] यह संस्तुति तात्कालिक राजव्यवस्था व समुद्र व्यापार का उल्लेख करती है। प्रतिष्ठित लोगों में व सामान्य में भी सम्भवत: पत्राचार जनसंचार का माध्यम था। राजा व शकुन्तला का प्रेम सम्बन्ध पत्र के गीत से आगे बढ़ा था। पत्रों में गीतों का प्रचलन सामान्यत: रहा होगा। पत्र किस प्रकार का हैं राजकार्य अथवा वैयक्तिक लोग भलि भाँति जानते थे। ग्रामवासीयों व नगरवासीयों में पत्र लेखन सर्वत्र

था। फूलों में पत्र रखकर देना यह घटना उल्लेखनीय हैं बहुत सम्भव है इस तरह राजा को जनसामान्य में सम्मान दिया जाता होगा ।

इस तरह अनेक प्रकार से विश्लेषण करने पर कालिदासकालीन पत्र व्यवहार सम्बन्धी अनेक तथ्य स्पष्ट होते हैं। पत्रचार विकसित अवस्था में था। आज वर्तमान सन्दर्भ में यद्यपि पत्राचार औपचारिक मात्र प्रचलन में है। अनौपचारिक मित्र, परिवार आदि से सम्बन्धित पत्राचार नगण्य सा है। संचार तकनीकी से व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं। ई-कार्मस, ई-मार्केटिंग व ई-मेल से लेखन का माध्यम हस्तलेख न्यूनता की ओर जा रहा है। दिन प्रतिदिन इसका ह्रास हो रहा हैं। कालिदास कालिन समाज में पत्राचार व्यापक तौर पर प्रचलित था तथा यह संचार का यह प्रमुख साधन था जिसके तथ्य इस आलेख में दिए गए है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-ऑक्सफोर्ड डिक्सनरी (पृ0सं0 232), अंग्रेजी-2 हिन्दी, सम्पादक डा0 सुरेश कुमार, डा0 रामनाथ, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, YMCA लाइब्रेरी बिल्डिंग रोड़, नई दिल्ली, 2008।

2-साहित्यदर्पण (श्रीविश्वनाथकृत) षष्ठम् परिच्छेद, सम्पादक-सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 2010।

3-अभिज्ञानशाकुन्तलम् कालिदासकृत पृ0सं0 346, सम्पादक-ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, (कालिदास ग्रन्थावली), चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी 2012 ।

4-आक्सनफोर्ड डि0 (पृ0सं0 696), 2008 ।

5-मालविकाग्निमित्रम पृ0सं0 647, श्री कालिदासकृत, सम्पादक-ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, कालिदास ग्रन्थावली, चौ0 सु0प्र0 वाराणसी, 2012 ।

6-मालविकाग्निमित्रम पृ0सं0 647-648, श्री कालिदासकृत, सम्पादक-ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, कालिदास ग्रन्थावली, चौ0 सु0प्र0 वाराणसी, 2012 ।

7-विक्रर्मोवशीयम्, पृ0सं0 497 ....

8-विक्रर्मोवशीयम्, पृ0सं0 497 ....

9-विक्रर्मोवशीयम्, पृ0सं0 503 ....

10-विक्रर्मोवशीयम्, पृ0सं0 498 ....

11-विक्रर्मोवशीयम्, पृष्ठ0सं0 499 ....

12-अभिज्ञानशाकुन्तलम्, पृ0सं0-384

13-अभिज्ञानशाकुन्तलम्, पृ0सं0- 385

14-अभिज्ञानशाकुन्तलम्, पृ0सं0- 395

15-अभिज्ञानशाकुन्तलम्, पृ0सं0- 434

16-अभिज्ञानशाकुन्तलम्, पृ0सं0- 445

17-अभिज्ञानशाकुन्तलम्, पृ0सं0- 445